

# ताज़ा पहल

## 100 डॉलर के लैपटॉप को लेकर आशंकाएं

लॉरिडा कीज़ लौंग

# सौ

डॉलर के लैपटॉप का विचार मैसाचूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी मीडिया लैब के सह संस्थापक और मानद अध्यक्ष निकलस नेग्रोपॉट की देन है। परियोजना के प्रबंधन के लिए उन्होंने बन लैपटॉप पर चाइल्ड नाम का गैर-सरकारी संगठन स्थापित किया। लेकिन संभावना है कि शुरूआती लैपटॉप का मूल्य 150 डॉलर होगा, बाद में अधिक मात्रा में उत्पादन होने पर शायद मूल्य कम हो जाए। मूल्य सम्बन्धी लक्ष्य के पूरा न हो पाने के अलावा भी इस परियोजना को लेकर आशंकाएं उठ रही हैं:

- क्या यह उपकरण उस वातावरण में लंबे समय तक व्यावहारिक होगा जहाँ बिजली की स्थिर आपूर्ति और ब्रॉडबैंड इंटरनेट कनेक्शन सुनिश्चित नहीं हैं?
- क्या वह बच्चे और शिक्षक जिन्होंने कभी कंप्यूटर नहीं देखा, इसका सृजनशील, शैक्षणिक उपयोग कर पाएंगे?
- क्या बहुत से समाजों में दूसरे और तीसरे

दर्जे के नागरिकों की हैसियत रखने वाले बच्चों को उनके समुदाय एक ऐसे उपकरण के स्वामित्व और उसके साथ प्रयोग की अनुमति देंगे जो वयस्कों को सहज उपलब्ध नहीं हैं?

- क्या संसार के सबसे गरीब बच्चों को सचमुच इसी की जरूरत है?

100 डॉलर के लैपटॉप के हिमायतियों की योजना यह है कि सरकारें इन्हें खरीदकर बच्चों को दें। क्या संसाधनहीन देशों के लिए यह अच्छा विकल्प है? क्या यह दानदाता देशों के लिए दान राशि खर्च करने का अच्छा तरीका है?

100 डॉलर का लैपटॉप तैयार करनेवाले मानकर चल रहे थे कि भारत से परियोजना का श्रीगणेश होगा, लेकिन भारत ने इसमें शामिल होने से इसलिए इनकार कर दिया है क्योंकि सरकार मानती है कि 100 डॉलर की राशि बच्चों के लिए इससे कहीं अधिक उपयोगी ढंग से खर्च की जा सकती है। शिक्षा सचिव सुदीप बनर्जी कह चुके हैं, “हम दशकों तक शुरूआती चरण पर ही अटके रहेंगे, (ऐसे) फैसी उपकरणों से कहीं ज्यादा जरूरत हमें कक्षाओं और अध्यापकों की है।”

बच्चों को पोषक आहार की जरूरत है। खासतौर पर जब उन्हें अवसर ही बिजली गुल रहने के कारण अपने लैपटॉप को हाथ

से (चक्की की तरह) संचालित करना हो। बन लैपटॉप पर चाइल्ड परियोजना (<http://www.worldchanging.com/archives/004543.html>) की व्यापक समीक्षा के बाद एथन ज़करमैन कहते हैं, छोटे बच्चे थोड़ी देर तक 5 से 10 वाट (बिजली) पैदा करने में सक्षम होते हैं, स्क्रीन अँॱन रहने पर परंपरागत लैपटॉप 6 से 8 वाट बिजली खींचते हैं—अगर बिजली की आपूर्ति बच्चों पर निर्भर है तो यह खासी समस्या आने वाली है।” लैपटॉप की बैटरी को फुट पैडल से चार्ज करने के सुझाव भी आए हैं जिनके पीछे तर्क यह है कि बांहों की अपेक्षा पांवों की पेशियों में अधिक ताकत होती है। अगर यह बात मान भी ली जाए तो स्कूल में बच्चों के एकाग्रचित्त होकर पाठों को सुन-समझ न पाने में पोषण की कमी एक महत्वपूर्ण घटक है। उस पर लैपटॉप को चलाने में लगी ऊर्जा (की हानि) शायद बच्चों को उसके माध्यम से मिलने वाली जानकारी का लाभ उठाने से बंचित रहेंगी।

बच्चों द्वारा स्वतःस्फूर्त ढंग से कंप्यूटर प्रोग्रामों के सृजन या शैक्षणिक सामग्री को तलाशने या कंप्यूटर से आदान-प्रदान के पर्याप्त साक्ष्यों को लेकर भी प्रश्न उठाए गए हैं। चिंता इस बात की भी है कि विकासशील देश क्या ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे सशक्त और

विश्वसनीय नेटवर्क स्थापित कर पाएंगे जिनके माध्यम से बच्चे एक-दूसरे और संसार से जुड़ सकें? अपने विशद लेख “प्रॉबलम्स विद द 100 डॉलर लैपटॉप” ([http://fonly.typepad.com/fonlyblog/2005/11/problems\\_with\\_t.html](http://fonly.typepad.com/fonlyblog/2005/11/problems_with_t.html)) में फोल्नी इंस्टीट्यूट ऑफ कैलिफोर्निया के ली फेल्सेनस्टीन पूछते हैं, “नेटवर्किंग अधिकांश लिंक्स के परिचालनीय बने रहने पर निर्भर होती है। तो क्या हम मान लें कि बैटरियों को चार्ज करने में लगने वाली खासी मशक्कत के बावजूद बन लैपटॉप पर चाइल्ड परियोजना के अंतर्गत उपलब्ध करवाए गए सभी लैपटॉप चालू हालत में रखे जाएंगे?”

नेग्रोपॉन्ट और उनके सहकर्मियों का कहना है कि कुछ प्रश्नों का उत्तर तो दूसरे ही लोग देंगे। उन्होंने अपने सामने एक बड़ी चुनौती रखी है और उसे पूरी करने की दिशा में कुछ बड़े अवरोध पार कर लिए हैं: हाई-टेक, आकर्षक, बच्चों द्वारा प्रयोग किए जाने के लिए, बिजली के बिना चलने वाला, रेगिस्तान की रेत से लेकर जंगल की फ़र्झूद तक को झेलने में सक्षम एक शैक्षणिक उपकरण का विकास। नेग्रोपॉन्ट कहते हैं कि इस परियोजना का भविष्य तो फिलहाल “परीक्षणों का एक लंबा सिलसिला है।”

इस विषय पर अपने विचार [editorspan@state.gov](mailto:editorspan@state.gov) पर भेजें।